पीलीबंगा-राज.। शिवजयंति महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए महामण्डलेश्वर श्री-श्री 1008 स्वामी आत्मानंदपुरी जी महाराज, उपखण्ड अधिकारी डॉ. अवि गर्ग, मुख्य चिकित्सा अधिकारी ब्र.कु. डॉ. मनोज कुमार अरोड़ा, व्यापार मण्डल अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जैन, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. रानी एवं ब्र.कु. ज्योति।

उस्मानाबाद-आनंद नगर। शिवरात्रि के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बाबा साहब यूनिवर्सिटी के प्रिंसीपल अनार सलुनके, सी.ई.ओ. संजय कोलटे, सोलापुर सबज़ोन की संचालिका ब्र.कु. सोमप्रभा, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

नागपुर-महा.। द टाइम्स ऑफ इंडिया एवं डॉ. रिचा यूनीक क्लिनिक द्वारा महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी, 2017 की मिसेज़ यूनिवर्स लवली शिल्पा अग्रवाल, सांसद रघुनंदन शर्मा, एम.डी. डॉ. रीचा आर. जैन तथा अन्य।

पनवेल-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्मार्ट केम टेक्नोलॉजी लि. दीपक फर्टीलाइज़र्स कम्पनी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य' की जानकारी देने के पश्चात् कम्पनी की ओर से डॉ. शुभदा नील को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए डॉ. स्वाती, शिल्पा जोशी, श्रीमति मंडल व अन्य।

भिलाई नगर-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हरिभूमि परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. गीता को सम्मानित करते हुए जिला उपभोक्ता फोरम की जज मैत्री माथुर, ए.एस.पी. सुरेशा चौबे, एस.आई. मोनिका पाण्डे व अन्य।

पिंपरी-पुणे। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु.सुरेखा।

नर्क का द्वार - काम, क्रोध व लोभ

- गतांक से आगे...

आसुरी प्रवृत्ति वाले लोग, लाखों इच्छाओं के जाल में बंधकर, विषय उपभोग की पूर्ति के लिए, अन्याय पूर्वक धन का संग्रह करना चाहते हैं। जिस कारण सभी से शत्रुता बढ़ती जाती है और वे शत्रुओं को मारना चाहते हैं। वह इसी भ्रम में जीने लगते हैं कि वह सर्व संपन्न हैं, उपभोगी हैं, सिद्ध पुरुष हैं, बलवान और सुखी हैं। ऐसे पुरुष के अंदर ये भ्रम होता है कि मैं जो चाहे कर सकता हूँ, मैं बलवान हूँ। वह सोचता है कि उसके जैसा धनवान कोई नहीं है। श्रेष्ठ कुल में मैं जन्मा हूँ। ऐसे अपने को श्रेष्ठ मानने वाले अहंकार के नशे में चूर रहते हैं। अपने नाम, मान, शान के लिए यज्ञ करते हैं और दान करते हैं। अर्थात् दान के पीछे भी उनके मन में अनेक प्रकार की प्राप्ति की इच्छायें समाई रहती हैं। ये उनके विशेष लक्षण देखे जाते हैं और पाए जाते हैं। इस कारण वो अनेक प्रकार के जाल में जैसे बंधते जाते हैं। अज्ञानता से भ्रमित चित्त वाले, मोह जाल में फँसे, विषय उपभोगों में आसक्त ये लोग घोर अपवित्र कर्म कर, नर्क समान जीवन जीते हैं। अहंकारी, बलवान, पाखण्डी, कामी, क्रोधी, सर्व की निंदा करने वाले, मनुष्यात्माओं से भी द्वेष करते और परमात्मा से भी द्वेष करते हैं। ऐसे द्वेष करने वाले कुकर्मी को बार-बार आसुरी प्रवृत्ति वाली योनियाँ ही प्राप्त होती हैं। जिसको दूसरे शब्दों में नर्क समान जीवन कहा जाता है। जिसके लिए शास्त्रों में गायन होता है कि वे नर्क के विष्टा समान कीड़े बन जाते हैं।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

भावार्थ यही है कि मनुष्य योनि में रहकर उनका जीवन पशु से भी अधिक बदतर हो जाता है। लेकिन ऐसा नर्क समान जीवन जीने वाले को फिर भी यह अनुभूति कहाँ होती है? भगवान ने नर्क के तीन द्वार बताये, वो हैं - काम, क्रोध और लोभ। इससे आत्मा का पतन होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को इन्हें त्याग देना चाहिए। जो इससे बचे रहते हैं वे आत्म साक्षात्कार के लिए कल्याणकारी कार्य करते हैं, परमगति को प्राप्त करते हैं। इसलिए ज्ञानयुक्त विधि विधान को जानकर कर्म करना चाहिए। कर्मों की गुह्य गति की ओर परमात्मा इशारा देते हैं और इसे स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य जीवन हमें किसलिए मिला है। कहा जाता है कि ये जीवन अनमोल है। ये परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें उसने एक विशेष शक्ति रखी है। बुद्धि कहो या विवेक की शक्ति, जिसके आधार पर सही गलत को पहचानना आसान हो जाता है। इस अमूल्य जीवन में रहते हुए भी व्यक्ति जब अपने विवेक का प्रयोग नहीं करता है, तो वो अपने जीवन को एक अद्योगति के मार्ग पर या पतन की ओर ले जाता है या नर्क के द्वार की ओर बढ़ने लगता है। यदि वो आत्म साक्षात्कार करके अपने जीवन को उन्नति की ओर ले जाता है तो परमकल्याणकारी मार्ग की ओर आगे बढ़ता है। इस प्रकार आसुरी गुण वालों के लक्षण, दैवी संस्कार वालों के लक्षण को स्पष्ट करते हुए भगवान ने यही प्रेरणा दी है कि हमें किस ओर जाना है। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

नहर का पानी सब फसलों को एक समान मिलता है, लेकिन फिर भी करेला कड़वा, बेर मीठा और इमली खट्टी होती है। यह दोष पानी का नहीं है, बीज का है... वैसे ही भगवान सबके लिए एक समान है, दोष तो सिर्फ हमारे कर्मों का है।

वृक्ष कभी इस बात पर व्यथित नहीं होता कि उसने कितने पुष्प खो दिए, वह सदैव नये फूलों के सृजन में व्यस्त रहता है। जीवन में कितना कुछ खो गया, इस पीड़ा को भूलकर, क्या नया कर सकते हैं, इसी में जीवन की सार्थकता है।

कहीं न कहीं कर्मों का डर है, नहीं तो गंगा पर क्यों इतनी भीड़ है? जो कर्म को समझता है, उसे धर्म को समझने की ज़रुरत ही नहीं। पाप शरीर नहीं करता, विचार करते हैं, और गंगा विचारों को नहीं, सिर्फ शरीर को धोती है।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 airtel 678 FASTWAY GTPL DEN
videocon 497 RELIANCE 640 hathway UCN DIGICABLE SITI

ABS FREE DTH

Free to Air

KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver

LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact

Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।